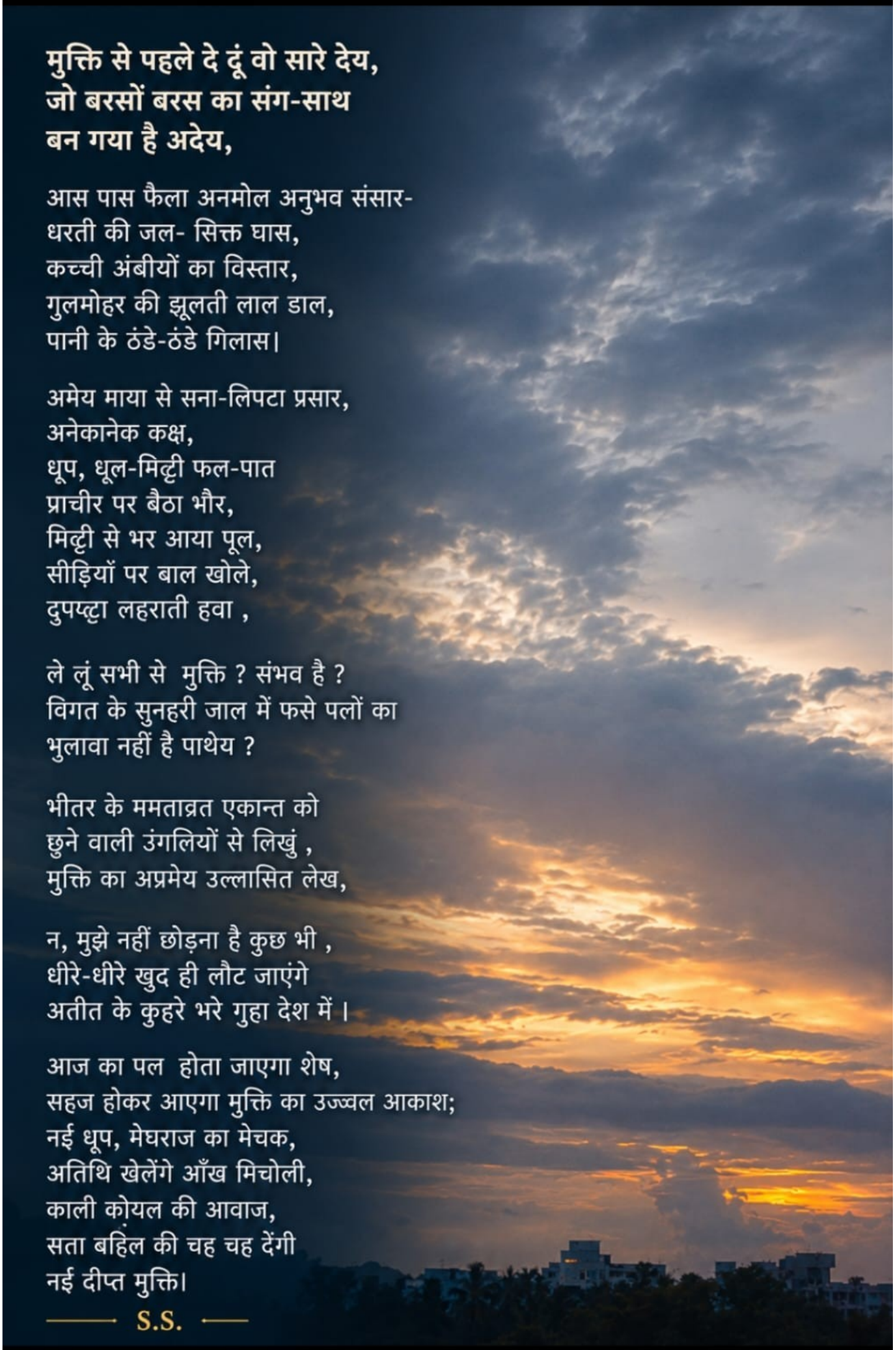

मुक्ति से पहले दे दूं वो सारे देय,
जो बरसों बरस का संग-साथ
बन गया है अदेय,

आस पास फैला अनमोल अनुभव संसार-
धरती की जल- सिक्त घास,
कच्ची अंबीयों का विस्तार,
गुलमोहर की झूलती लाल डाल,
पानी के ठंडे-ठंडे गिलास।

अमेय माया से सना-लिपटा प्रसार,
अनेकानेक कक्ष,
धूप, धूल-मिट्टी फल-पात
प्राचीर पर बैठा भौर,
मिट्टी से भर आया पूल,
सीड़ियों पर बाल खोले,
दुपट्टा लहराती हवा ,

ले लूं सभी से मुक्ति ? संभव है ?
विगत के सुनहरी जाल में फसे पलों का
भुलावा नहीं है पाथेय ?

भीतर के ममताव्रत एकान्त को
छुने वाली उंगलियों से लिखुं ,
मुक्ति का अप्रमेय उल्लासित लेख,

न, मुझे नहीं छोड़ना है कुछ भी ,
धीरे-धीरे खुद ही लौट जाएंगे
अतीत के कुहरे भरे गुहा देश में ।

आज का पल होता जाएगा शेष,
सहज होकर आएगा मुक्ति का उज्ज्वल आकाश;
नई धूप, मेघराज का मेचक,
अतिथि खेलेंगे आँख मिचोली,
काली कोयल की आवाज,
सता बहिल की चह चह देंगी
नई दीप्त मुक्ति।

— S.S. —